इसको कहा जाता है याद की आग। याद अक्षर क्यों डाला है क्यों कि इसमें पाप भस्म हो जाते हैं। यह तो तुम बच्चे ही जानते हो कि हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं। अब यह तो बिल्कुल समझ की बात है सतोप्रधान और तमोप्रधान। सतोप्रधान को ही कहा जाता है पुण्यात्मा। और तमोप्रधान को ही है पापात्मा। कहा भी जाता है यह बहुत पुण्यात्मा है। यह पापात्मा है। इससे सिद्ध होता है आत्मा ही सतोप्रधान बनती है फिर पुनर्जन्म लेते-2 तमोप्रधान बनती है। इसलिये इसको पापात्मा कहा जाता है। इसलिये पतित पावन को याद करते हैं कि आकर पावन आत्मा बनाओ। पतित आत्मा किसने बनाया? यह किसीको भी पता नही है। यह अभी तुम बच्चे ही जानते हो। जब पावन आत्मायें थी तो फिर राम राज्य कहा जाता था। अभी पतित आत्मायें हैं इसलिये रावण राज्य कहा जाता है। भारत ही पावन, भारत ही पतित। बाप भी आकर भारत को ही पावन बनाते है। बाकी सब आत्मायें पावन बनकर शान्ती धाममें चली जाती है। अभी है दुखधाम। यह कितना सहज है समझाना। परन्तु कइयों की बुधी में बैठता ही नही है। जब दिल से समझें तो सच्चे ब्राहम्ण बने। ब्राहम्ण बनें बिना बाप से वर्सा मिल नही सकता है। इसलिये संगमयुग पर ही यज्ञ है। यज्ञ के लिये ब्राहम्ण जरूर चाहियें। अभी तुम ब्राहम्ण बने हो। जानते हो यह मृत्यु लोक का अभी अन्तिम यज्ञ है। मृत्यु लोक में ही यज्ञ होता है। अमरलोक में तो यज्ञ होता ही नही है। भक्तों की बुधी में यह बातें बैठ नही सकती हैं। भक्ति बिल्कुल ही डिफरेंट है। ज्ञान बिल्कुल अलग है। मनुष्य फिर शास्त्रों वेदों आद को ही ज्ञान समझ लेते हैं। अगर इनमें ज्ञान हो फिर तो मनुष्य वापस चले जावें। परन्तु ड्रामा प्लान अनुसार वापस कोई जा नही सकते है। बाप ने समझाया है पहले नम्बर वालों को ही सतो, रजो तमो में आना पड़ता है, तो दूसरे फिर सिर्फ सतो का पार्ट बजा कर वापस कैसे जा सकते हैं। उनको तो फिर तमोप्रधान में आना है। पार्ट बजाना ही है। हरेक, एक्टर की ताकत अपनी-2 होती है ना। बड़े-2 एक्टर्स कितने नामी ग्रामी होते है। सबसे मुख्य क्रियेटर, डायरेक्टर और मुख्य एक्टर कौन है? अभी तुम समझते हो गाड फादर है मुख्य। पीछे फिर जगतअम्बा जगतपिता, जगत के मालिक। विश्व का मालिक बनते हैं ना। इनका पार्ट जरूर ऊंचा है। तो इनको पे (तनख्वाह) भी जरूर इतनी ऊंच मिलती है। पे देते हैं बाप जो ही सबसे ऊंच है। कहते है तुम मुझे इतनी मदद करते हो। तो तुमको पे भी जरूर उतनी मिलेगी। बैरिस्टर पढ़ावेंगे तो कहेंगे इतना ऊंच प्राप्त करते हैं। तो इस पढ़ाई पर बच्चों को कितना अटेन्शन देना चाहिये। गृहस्थ में रहते कैसे योग सन्यास है ना। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये कैसे सब कुछ करते हुये बाप से पूरा वर्सा पाने पुरुषार्थ कर सकते है। इसमें कोई तकलीफ नही है। काम काज करते हुये शिव बाबा की याद में रहना है। नालेज तो बड़ी सहज है। गाते भी है हे पतित पावन आकर हमको पावन बनाओ। पावन दुनिया में तो राजधानी है। तो उस राजधानी का भी लायक बनाते है। इसमें मुख्य है ही दो सब्जेक्ट अल्फ और बे। स्वदर्शनचक्र धारी बनो। बाप को याद करो तो तुम एवर हेल्दी एवर वेल्दी बनेंगे। बाप कहते है मुझे वहाँ याद करो। घर को भी, याद करो। मुझे याद करने से तुम घर चले जावेंगे। स्वदर्शनचक्र धारी बनने से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। यह बुधी में अच्छी रीत रहना चाहिये। इस समय सभी तमोप्रधान हैं। पुरानी दुनिया है ही तमोप्रधान नई दुनिया को सतोप्रधान कहेंगे। सतोप्रधान दुनिया में सिर्फ एक ही धर्म होता है। बाकी सब आत्मायें मुक्ति धाम में चली जाती है। उसको कहा जाता है शान्ती धाम। और वो है सुख धाम। वहाँ सुख सम्पत शान्ती सब कुछ मिलता है। एक धर्म होता है। बाकी इतने सब अनेक धर्मों में अशान्ती होती है। अभी तो देखो घर घर-2 में अशान्ती है। तमोप्रधान पतित है ना। स्टूडेन्ट लोग देखो कितना हंगामा करते है। अपना न्यू ब्लड दिखाते है। यह है ही तमोप्रधान दुनिया। बाप संगम पर आया हुआ है। तुम जानते हो यह महाभारत लड़ाई भी संगम पर ही लगती है। अभी यह दुनिया बदलती है। बाप भी कहते है मैं नई दुनिया की स्थापना करने संगम युग पर आता हूँ। इनको ही पुरुषोत्तम युग कहा जाता है। पुरुषोत्तममास,

पुरुषोत्तम संगम, भी मनाते हैं। परन्तु इस पुरुषोत्तम संगम का किसीको पता नहीं है। संगम पर ही बाप आकर तुमको हीरे जैसा बनाते है। फिर इन में भी नम्बरवार तो होते हैं ना। हीरे जैसे सोनारी बन जाते हैं। बाकी सोने जैसी प्रजा बन जाती है। हीरों में भी थोड़ा-2 फर्क रहता है। यह बड़ी समझ की बातें हैं। बाप से वर्सा लेना तो बहुत सहज है। बच्चे ने जन्म लिया और वर्से का हकदार बन गया। अभी तुम पावन दुनिया के हकदार तो बन जाते हो। फिर इसमें ऊंचा पद पाने लिए पुरुषार्थ करना है। इस समय का पुरुषार्थ तुम्हारा कल्प-2 का पुरुषार्थ सिद्ध होगा। समझा जाता है यह कल्प-2 ऐसा ही पुरुषार्थ करेंगे। इनसे जास्ती पुरुषार्थ होगा ही नहीं। जन्म जन्मान्तर कल्प कल्पान्तर यह प्रजा में ही आवेंगे। साहुकार प्रजा में, यह दास दासियां बनेंगे, नम्बरवार तो होते हैं ना। पढ़ाई के आधार पर सब मालूम पड़ जाता है। बाबा हमेशा कहते हैं किसीको भी पूछना हो कि इस वक्त शरीर छोड़ें तो क्या बनेंगे बाबा झट बता देंगे। दिन प्रति दिन टाइम थोड़ा रहता जाता है। अगर कोई शरीर छोड़ेंगे फिर भी सर्विस तो कुछ भी कर नहीं सकेंगे। पढ़ नहीं सकेंगे। छोटेपन में तो पढ़ नहीं सकेंगे। हां:- थोड़ा सिर्फ बुद्धि में आवेगा तो शिव बाबा को याद करेंगे। जैसे देखो यहां एक छोटा बच्चा (पुष्पा) है उनको भी याद कराते हैं तो शिव बाबा शिव बाबा करता रहता है। तो उनको भी कुछ मिल सकता है। छोटा बच्चा तो महात्मा मिसल है। विकारों का तो पता नहीं है। जितना बड़ा होता जावेगा विकारों का मालूम होता जावेगा। क्रोध होगा। मोह होगा। अभी तुमको तो समझाया जाता है इस दुनिया में इन आंखों से जो देखो उनसे ममत्व तोड़ो। इस पुरानी दुनिया के तो हम ट्रस्टी हैं। नई दुनिया में तो हम भविष्य में मालिक बनेंगे। इस दुनिया की तो कोई भी चीज़ हमको कुछ पसन्द नहीं है। यह शरीर भी बहुत जन्मों के अन्त का है इससे भी हम ममत्व मिटा देते हैं। आत्मा जानती है यह तो सब कब्रदाखिल होना है।

मनुष्य मरते हैं तो पुरानी चीजें करणीघोर को दे देते हैं ना। बाप तो फिर बेहद का करणीघोर है। धोबी भी है। तुमसे लेते क्या है? और देते क्या है। तुम जो कुछ थोड़ा भी देते हो वो तो सब कुछ खलास ही होने का है। फिर भी बाप कहते हैं यह धन रखो अपने पास। सिर्फ ममत्व मिटा दो। हिसाब किताब बाप को देते रहो। फिर डायरेक्शनस मिलते रहेंगे। तुम्हारा यह बाबपन तो है वो यूनिवरसिटी और हास्पिटल में हेल्थ और वेल्थ के लिये लगा देते हैं। हास्पिटल होती है बिमारी के लिये। यूनिवरसिटी होती है पढ़ाई के लिये। यह तो हास्पिटल और कालेज दोनों इकठे हैं। इसके लिये तो सिर्फ तीन पैर पृथ्वी के चाहिये। बस।

जिनके पास और कुछ नहीं है वो सिर्फ तीन पैर पृथ्वी के दे देवें। इसमें क्लास लगा दें। सिर्फ तीन पैर पृथ्वी के। वो सिर्फ बैठने की जगह हुई ना। आसन तीन पैर का ही होता है। तीन पैर पृथ्वी पर कोई भी आवेंगे अच्छी रीत समझ कर जावेंगे। कोई आया आसन पर बिठाया और बाप का परिचय दिया। बैजिज़ बहुत-2 बनवा रहे हैं। सर्विस के लिये। यह है बहुत सिम्पल। चित्र छपे हुये भी अच्छे हैं। लिखत भी पूरी है। बाबा ख्याल कर रहे हैं यह कपड़े पर बन सकता है वा नहीं। यह प्लास्टिक के बनायें तो हैं। परन्तु इसमें कड़ी होगी तो अच्छी रीत पहन सकेंगे। इससे तुम्हारी बहुत सर्विस होगी। दिन प्रति दिन जितनी आफतें आती रहेंगी तो मनुष्यों को भी वैराग आवेगा। और बाप को याद करने लग पड़ेंगे। हम आत्मा अविनाशी हैं। यह शरीर विनाशी है।

हम आत्माओं का बाप भी अविनाशी है। अब हम अपने अविनाशी बाप को याद करें। बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के पाप उतर जावें। अपने को आत्मा समझ और बाप से पूरा लव रखना है। देह अभिमान में नहीं आओ। हां:- बाहर का प्यार भले बच्चों आद से रखो। परन्तु आत्मा का सच्चा प्यार रूहानी बाप से हो। उनकी याद से विकर्म विनाश होंगे। अपने मित्र सम्बन्धियों आद को देखते हुये भी बुद्धि अपने बाप की याद में लटकी रहे। तुम बच्चे जैसे कि याद की फांसी पर लटके हुये हो। आत्मा को अपने बाप परमात्मा को याद करना है। बुद्धि ऊपर लटकी रहे। बाप का घर भी ऊपर है ना। मूल वतन, सूक्ष्मवतन, और यह है स्थूल वतन। मूल वतन से हम आये हैं। अभी फिर वापस जाना है। अभी नाटक पूरा होता है।

वापस अपने घर जाना है। यह है बेहद का घर। मुसाफरी से जब अपने घर लौटते हैं तो अपना घर कितना प्यारा लगता है। मनुष्य भक्ति करते हैं घर जाने लिये परन्तु ज्ञान पूरा है नही तो घर जा नही सकते है। भगवान पास जाने लिये निर्वाण धामजाने लिये कितनी तीर्थ यात्रा आद करते है। सन्यासी लोग सिर्फ रस्ते का ही रस्ता बताते है। सुखधामको तो जानते ही नही। सुखधाम का रस्ता सिर्फ बाप बताते है। पहले जरूर निर्वाण धाम वानप्रस्थ में जाना है। जिसको ब्राहमांड भी कहते है। वो फिर ब्रह्म को ईश्वर समझ बैठते है। यह बातें कोई समझते नही कि ब्रह्माण्ड में हम आत्मायें कैसे रहती हैं। यह भी किसीको पता नही है कि हम आत्मा बिन्दी हैं। हमारा रहने का स्थान है ब्रहमांड। तुम्हारी भन पूजा तो होती है ना। अब बिन्दी की पूजा क्या करेंगे। जब पूजा करते है तो शालीग्राम बनाके एक एक आत्मा की पूजा करते हैं। इतने बनाते है। बिन्दी की पूजा कैसे हो। इसलिये बड़े-2 बनाते है। बाप को तो अपना शरीर है नही। यह बातें अभी तुम जानते हो। चित्रों में भी तुमको बड़ा रूप दिखाना पड़ता है। बिन्दी से कैसे समझेंगे। यों तो बनाना चाहिये स्टार ऐसे बहुत तिलक भी मातायें समझकर लगाती है। तारे मिलते है सफेद। आत्मा भी सफेद होती है ना स्टार मिसल। यह भी एक निशानी है। भृकुटी के बीच चमकता हुआ सितारा। आत्मा यहां रहती है ना। बाकी और को किसीको पता नही है। यह बाप समझाते है इतनी छोटी आत्मा में कितना ज्ञान है। इतने बाम्बस के सोपलेन्स आद बनाते है रहते है। वण्डर है। आत्मा में इतना सब पार्ट भरा हुआ है। यह बड़ी गुहय बातें है। इतनी छोटी आत्मा शरीर से कितना काम करती है। इसका पार्ट कब विनाश नही होता है। 84 जन्मो का पार्ट नूंधा हुआ है। अब 500 करोड़ मनुष्य हैं। सतयुग में कितना छोटा झाड़ होता है। प्रलय तो होती नही है। मीठे छोटे झाड़ का कलम अभी लग रहा है। तुम बच्चे जानते हो हम ही पतित बने थे। अब फिर पावन बनते हैं। छोटी सी आत्मा में कितना पार्ट है। कुदरत यह है। अविनाशी पार्ट चलता रहता है। यह कब बन्द नही हो सकता है। अविनाशी चीज है। इसमें अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। यह वण्डर है ना। बाप समझाते है बच्चों देही अभिमानी बनना है। अपने को आत्मा समझ कर बाप को याद करो। — इसमें है मेहनत कि हम आत्मा अविनाशी हैं। ऐसे नही कि हमारी आत्मा अविनाशी है। हम आत्मा कितनी

*************************************************

छोटी है। कितना इसमें पार्ट भरा हुआ है। उसमें से भी सबसे जास्ती पार्ट तुम्हारा है। बाबा का इतना पार्ट नही है जितना कि तुम्हारा। बाप कहते है तुम स्वर्ग में सुखी बन जाते हो तो फिर मैं विश्राम में बैठ जाता हूँ। हमारा कोई पार्ट नही। इस समय बहुत सर्विस करता हूँ ना। यह नालेज कितनी वण्डरफुल है। तुम्हारे सिवाय जरा भी कोई नही जानते हैं। बाप की याद में रहने बिना धारणा भी नही होगी। खान पान की ठीक पड़ने पर धारणा में ठीक पड़ जाता है। दूसरी प्योरिटी बड़ी अच्छी चाहिये। बाप को याद करना है बहुत सहज। बाप को याद करना और वर्सा पाना है। इसलिये बाबा ने कहा था तुम अपने पास चित्र सब दो। योग का और वर्से का चित्र बनाओ। तो नशा रहेगा कि हम ब्राहमण सो देवता बन रहे हैं। फिर हम देवता सो क्षत्री बनेंगे। ब्राहमण है पुरुषोत्तम संगम युगी। तुम पुरुषोत्तम बनते हो ना। मनुष्यों की बुद्धी में यह बातें बिठाने के लिये कितना मेहनत करनी पड़ती है। दिन प्रति दिन जितना नालेज को समझते जाते है खुशी भी बढ़ेगी। तुम बच्चे जानते हो बाबा हमारा बहुत कल्याण करते है। बाकी तो सब अकल्याण ही करते है। तुम हो शिव शक्तियां। मनुष्यों को रस्ता बताते हो। वो भक्ति मार्ग में अनेक रस्ते बताते है। भगवानसे मिलने लिये। परन्तु जहां पर भी जाओ माथा टूटता है दीवार से। भगवान किसीको भी मिलता ही नही है। माथा टूटे और जख्म हो जावें। गिर पड़ते है। अभी बाप कितना सहज करके समझाते है। तुम बच्चे जानते हो कल्प -2 हमारी चढ़ती कला होती है। नई बात नही है। शरीर निर्वाह अर्थ भी सब कुछ करना पड़ता है। सब एक भण्डारे से तो खा नही सकते है। हां जो सरेण्डर है वो भण्डारे से ही खाते है।

सरैण्डर नही है तो गोया भण्डारे से नही खाते है। शिव बाबा के भण्डारे से हम खाते है। शिव बाबा को याद करते रहेंगे तो सब काल कंटक दूर हो जावेंगे। फिर यह पुराना शरीर छोड़ चले जावेंगे। बच्चे समझते है बाबा कुछ भी लेते नही है। वो तो दाता है ना। बाप कहते है हमारी श्रीमत पर चलो। अगर किसीको पैसे दिये और उसने जाकर शराब आद पी, बुरे काम किये, तो उसका पाप तुम्हारे ऊपर आ जायेगा। पापात्माओ से लेने देने करते है तो पापात्मा बन जाते है। कितना फर्क है। पापात्मा को लेने देने करते-2 पापात्मा हो बन जाते है। यहाँ तो तुमको पुण्यात्मा बनना है। बाप कहते है कोई को भी देख बत्त हो। कोई से मोह नही रखना है। 5 विकार तो तुमने दान में दिये है ना। दे दान तो छूटे ग्रहण। अभी भ्रकुटी पर राहु का ग्रहण है।

सीढी के चित्र पर किसीको भी समझाना बहुत सहज है। बैंक वालों का काम ही होता है लेने और देने का। किसके पैसे लेने किसीको पैसे देने। बाप भी बैंकर बन कर आते है। पुराना खरपन लेते है। देते देखो कितना है। ब्याज तो बड़ा भारी देते है। देला तो देखो कितना है। दो मुठी के बदले महल दे देते है। ओम

13-1-1967 :- रही हुई पुआइन्टः-बच्चों को पता नही खुशी क्यों नही चढ़ती है। कि भगवान हमको पढ़ा रहे है। बन्दरों को कुछ भी पता नही है। अपने को रूप ही नही समझते है। तुम कह सकते हो रामायण की कथा सारी भारत पर ही है। सिर्फ समझाने का रिवाज चाहिये। अनेक प्रकार के बन्दर होते हैं जंगल में रहने वाले है। पूंछ होती ही नही है। जैसे कुत्ते की पूंछ। बाप भी 40'50 वर्ष नड़ी में डालते है, फिर वैसे के वैसे बन जाते है। इसमें बुद्धी से काम लेना होता है। तुम्हारों में से भी बहुत थोड़े है जो हसनशे में रहते है। ओम

12-1-67:- अगर कोई सुख धाम चलना चाहे तो यह मंत्र है मनमनाभव। ऐसे पत्रे छपे हो जो सबके पास हो। हिमचान में भी बांट सकते है। सर्विस का शौक रखते है परन्तु करने वाले बहुत थोड़े है। सर्विस की युक्तियां तो बाबा बहुत बताते है। यह तो अच्छी रीत लिख कर छपाना चाहिये। रैम आब्जेक्ट तो लगा हुआ है। त्रिमूर्ती का चित्र तो है ही। मुक्ति जीवन मुक्ति तुम्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है। वो भी लिखा हुआ हो।

इस समय महि रावण राज्य है राक्षस सम्प्रदाय है। यह भी लिख सकते हो। डरने की बात नही है। गवर्मेन्ट आफीसरस खुद कहते है कि यह राक्षस राज्य है। कहते है तुमको अधिकारी नही लिखना चाहिये। उनको अखबार में पड़ा हुआ चित्र दे देना चाहिये। यह तो गवर्मेन्ट खुद ही दिखाती है। समझाने की बड़ी अच्छी युक्ति चाहिये। मीठे-2 सिकीलधे सपूत आज्ञाकारी फरमानबरदार बच्चों को मातपिता बाप दादा का प्यार ओम

रात्री क्लास:-9-1-1967:- मैगजीन भी सुनानी चाहिये। मैगजीन कोई बाहर वालों के लिये नही है। बच्चों के लिये है। सो भी जो सर्विस करते है। जो सर्विस नही करते है उनके लिये पढ़ना नही पढ़ना एक ही बात है। किसीको समझाते तो है नही। मैगजीन में कुछ पुरानी पुआइन्टस भी आती है। दिल्ली और बाम्बे ही है जहां बहिनों को कुछ सिखाया जाता है। इसमें फायदा है। एक दो को देख कर सीखते है। जहां कन्यायें जास्ती है वो सैन्टर सुभाग। पहले नम्बर में है बोम्बे में कन्यायें जास्ती। दूसरे नम्बर में है दिल्ली। फिर है पंजाब। बेंगलोर में भी कन्यायें है। परन्तु उनकी फिर भाषा और है। दिन प्रति दिन प्रदर्शनी की सर्विस होती जावेगी। तो कहीं ना कहीं से आते जावेंगे। मौत देख कर मनुष्यों को फिर वैराग आवेगा। और फिर ज्ञान आकर सुनेंगे। सारी दुनिया के लिये एक ही दवाई है:- ईश्वर बन्दी बनने की। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है वर्सा पाना है। यह तो सिर्फ तुम बच्चों को ही पता है कि बाप को याद करने से बेड़ा पार होता है। विषय सागर से निकल अमृत सागर में जाते है। यह सबसे बड़ा मन्त्र है अथवा सिवा है। अगर अपनी उन्नती करनी है तो टाईम निकाल इस कमाई में लग जाना चाहिये। बहुत भारी बेहद की कमाई है। ओम

डायरैक्शन:- सोनीपत सैन्टर का पता बदली हो गया है जो कि नीचे लिखा है:-

*******

ब्रह्मा कुमारीज़
20/आर माडल टाउन
सोनीपत (रोहतक)

BRAHMA KUMARIS
20/R, MODEL TOWN,
SONEPAT (ROHTAK).

BRAHMA KUMARIS
20/R MODEL TOWON
SONEPAT (ROHTAK)